P: ISSN NO.: 2394-0344 RNI No.UPBIL/2016/67980 VOL-I* ISSUE-IX* December- 2016
E: ISSN NO.: 2455-0817 *Remarking An Analisation*

जनपद चमोली में भोटिया जनजाति स्थानान्तरण के प्रमुख कारण एवं उसके प्रभाव (10 गाँवों के प्रतिदर्श अध्ययन पर आधारित)

मुरली सिंह
शोधछात्र,
भूगोल विभाग,
राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय,
गोपेश्वर, चमोली,
उत्तराखण्ड

बी0 पी0 देवली
विभागाध्यक्ष
भूगोल विभाग,
राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय,
गोपेश्वर, चमोली,
उत्तराखण्ड

सारांश

उत्तराखण्ड राज्य में पाँच जनजातियाँ निवास करती हैं। भोटिया, जौनसारी, थारू, बौक्सा, राजी जनजातियॉ राज्य के पूर्व, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय सीमाओं में सीमा प्रहरी के रूप में विषम भौगोलिक परिस्थितियों, कठिन जलवायु में निवास करते हैं। इनके पास मूलभूत आवश्यक सुविधाओं का आभाव है। जिसके कारण जनजातियाँ अपने मूल स्थान से नगरों एवं शहरों की ओर स्थानान्तरित हो रही हैं। प्रस्तुत शोध पत्र में जनपद चमोली की भोटिया जनजाति में हो रहे पलायन के कारण एवं प्रभाव का अध्ययन किया गया है। जनपद में भोटिया जनजाति निति एवं माणा घाटियों में निवास करती है। जहाँ विषम भौगोलिक परिस्थितियाँ एवं आधुनिक, आवश्यक सुविधाओं का आभाव देखा जा सकता है। इसलिए जनजाति के लोग सुख सुविधाओं की लालसा एवं अपनी आधुनिक सुविधाओं की पूर्ति हेतु नगरों की ओर स्थानान्तरित हो रही हैं। जिसका प्रभाव सीमान्त क्षेत्रों में देखा जा सकता है, सीमान्त क्षेत्र जनविहीन होते जा रहे हैं, नगरीय क्षेत्रों में जनसंख्या बढ़ती जा रही है। जो हमारे सीमान्त क्षेत्रों के लिए चिन्ता का विषय है। राज्य एक पर्वतीय एवं विषम भौगोलिक परिस्थितियों वाला क्षेत्र है, परिस्थितियों के अनुसार क्षेत्र में सुविधाऐं प्रदान करने की आवश्यकता है। जिससे पलायन को रोका जा सके और सीमान्त क्षेत्रों का विकास सम्भव हो सकें।

मुख्य शब्दः सामाजिक, जनजाति, स्थानान्तरण, भौगोलिक, भोटिया, परिस्थितियाँ, परम्परागत, आधुनिक,उद्योग।

प्रस्तावना

अनादि काल से ही मानव घुमक्कड़ प्रवृति का रहा है। वह विभिन्न उददेश्यों की पूर्ति के लिए जैसे उद्यम, शिक्षा, युद्ध, रोजगार धर्म एवं उन्नत जीवन की आशा में एक स्थान से दूसरे स्थान की ओर या एक देश से दूसरे देश की ओर स्थानान्तरण करता रहा है। यह अनादि काल से वर्तमान में भी जारी है, अल्पावधि से प्रायः स्थानान्तरण की कोई समय सीमा तय नहीं होती स्थानान्तरण अल्पावधि और दीर्घावधि दोनों प्रकार का हो सकता है। मुख्य रूप से जब कोई व्यक्ति या समूह एक समयावधि अथवा स्थायी रूप से एक स्थान से दूसरे स्थान या एक क्षेत्र से दूसरे क्षेत्र में स्थानान्तरित हो जाते है, उसे जनसंख्या का स्थानानतरण कहा जाता है, स्थानान्तरण एक ऐसा कारक है, जिसमें किसी भी देश की जनसंख्या की मात्रा, लिंगानुपात, वितरण, घनत्व आदि शीघ्र प्रभावित होते हैं। जनसंख्या परिवर्तन तीन प्रमुख तत्वों (जन्मदर, मृत्युदर, तथा स्थानान्तरण) में स्थानान्तरण की संकल्पना एवं मापन का कार्य सर्वाधिक कठिन होता है, स्थानान्तरण एक बहुत महत्वपूर्ण जनांकिकीय घटना भी है, जो जनसंख्या के आकार वितरण एवं संरचना को शीघ्र प्रभावित करता है। इस तरह स्थानान्तरण किसी समुदाय की जनसंख्या के वितरण को महत्वपूर्ण ढंग से प्रभावित करता है। स्थानान्तरण में किसी भी प्रकार की निश्चितता नही होती है। इसका मापन तथा अनुमान लगाना भी सम्भव नहीं है, व्यक्तियों के एक बड़े समूह का एक साथ स्थानान्तरण होने पर देश की सामाजिक–आर्थिक एवं सांस्कृतिक व्यवस्था में खलबली मच जाती है। इससे सामाजिक, सांस्कृतिक व आर्थिक स्तर आदि में परिर्वतन आ जाता हैं।

भूमण्डलीकरण के दौर में विश्व का सम्भवतया ही कोई ऐसा क्षेत्र हो जो स्थानान्तरण के प्रभाव से दूर हो, यह कटु सत्य है कि स्थानान्तरण मनुष्य के प्रारम्भिक काल से ही चलन में है, जिसका स्वरूप मात्र भिन्न–भिन्न रहा है।

हालांकि मनुष्य के मूल से लेकर अब तक का स्थानान्तरण का सम्बन्ध मानवीय उदर पूर्ति व अर्थव्यवस्था से रहा है। वर्तमान समय में 'स्थानान्तरण अर्थव्यवस्था में परिर्वतन करने का एक मूलमंत्र अथवा आधार प्राप्त कर चुका है। 'विकसित राष्ट्रों की जनसंख्या सुदृढ़ अर्थव्यवस्था हेतु विकसित राष्ट्रों की ओर स्थानान्तरित हो रही हैं। और अल्पविकसित राष्ट्रों की जनसंख्या प्रायः विकासशील राष्ट्रों की ओर स्थानान्तरित हो रही हैं। भारतीय अन्तर्राष्ट्रीय स्थानान्तरण के वर्तमान परिदृश्य के परिप्रेक्ष्य में उच्च शिक्षित लोग विकसित राष्ट्रों की ओर स्थानान्तरित हो रहे है,जबकि मध्यम वर्गीय भारतीय जनमानस विकासशील राष्ट्रों में अपनी जीविकोपार्जन हेतु स्थानान्तरण कर रह हैं, साथ ही भारतीय मध्यमवर्गीय जनमानस राष्ट्र के बड़ें–बड़ें महानगरों में स्थानान्तरण कर रहा है, जो राष्ट्र की अर्थव्यवस्था की आर्थिक राजधानियों के रूप में भी प्रसिद्व है। उतराखण्ड राज्य की बिषम भौगोलिक परिस्थतियों ने इसके जनमानस को पहले से ही स्थानान्तरण के लिए मजबूर कर रखा है, अर्थात स्थानान्तरण इनके लिए प्राकृतिक अभिशाप व आर्थिक विवशता के रूप में हैं, जनपद चमोली जो कि राज्य का सीमांत एवं सुदूरवर्ती जनपद है,के अर्न्तगत निवास करने वाली लाखों जनसंख्या का भरण–पोषण जनपद के संसाधनों से हो पाना कठिन है। सरकारी व गैर सरकारी रोजगार के क्षेत्र में कुल जनसंख्या का निम्न भाग ही रोजगार प्राप्त करके जीवन यापन कर सकता है, शेष जनसंख्या को बाध्य होकर स्थानान्तरण करके अपनी अर्थव्यवस्था सुनिश्चित करनी पड़ती है, इसलिए जनपद के अधिकांश युवा, युवावस्था प्राप्त करने के साथ ही जनपद से स्थानांन्तरित हो जाते है।

भौगोलिक पृष्ठभूमि एवं कार्य विधि

प्रस्तुत शोध पत्र उतराखण्ड राज्य के सीमान्त जनपद चमोली में निवास करने वाली भोटिया जनजाति के लोगों मे हो रहे तीव्र स्थानान्तरण पर प्राथमिक एवं द्वितीयक आंकड़ो पर आधारित है, शोध कार्य हेतु जनपद चमोली के 10 सीमान्त भोटिया जनजाति गाँवों का चयन किया गया है। अध्ययन में प्रत्येक परिवार के सदस्यों से उनके स्थानान्तरण के कारणों की जानकारी ली गयी, अध्ययन से यह ज्ञात हुआ कि निकट भविष्य में ये एक विकट समस्या बनकर इनके सामाजिक, सांस्कृतिक क्रियाकलापों को प्रभावित कर सकती है। जनपद चमोली के सीमान्त क्षेत्रों में निवास करने वाली भोटिया जनजाति कठिन भौगोलिक परिस्थितियों में जीवन यापन करती है। जनपद के दो (नीति व मणा) घाटियों में भोटिया लोग निवास करते है, इन घाटियों में मार्छा व तोलछा उपनाम की भोटिया जनजातियों के निवास स्थान हैं। कठिन भौगोलिक परिस्थितियों में रहने के आदि इन लोगों को सीमा प्रहरी के रूप में भी जाना जाता है, किन्तु क्षेत्र में अध्ययन करने पर ज्ञात हुआ कि वर्तमान समय में आधुनिक संसाधनों की अत्यधिक कमी के कारण ये लोग अपने मूल गाँवो से स्थानान्तरित हो रहे हैं, जैसे– यातायात, शिक्षा, चिकित्सा, रोजगार आदि प्रमुख सुविधाओं की इन क्षेत्रों में कमी होने के कारण ये लोग नगरीय क्षेत्रों की ओर पलायन कर रहे है, पलायन का मुख्य कारण शिक्षा है, यहॉ पर प्राथमिक से लेकर जूनियर तक के लिए शिक्षण संस्थाओं की कमी है, सरकारी शिक्षण संस्थाओं में सुविधाओं की कमी व पढ़ाई का स्तर देख सभी अभिभावक अपने बच्चों को अच्छे अंग्रेंजी स्कूलों में पढ़ाने हेतु नगरीय क्षेत्रों की ओर पलायन कर रहे है। आज के प्रतिस्पर्धा के दौर में जो संस्थाए वर्तमान समय में हैं, तो वे छात्र संख्या की कमी के कारण बन्द हो चुके है। इसलिए इन क्षेत्रों में सरकार को उचित व आधुनिक शिक्षण संस्थाओं की व्यवस्था करनी होगी ताकि पलायन को रोका जा सके।

जनजाति क्षेत्रों में भौगोलिक परिस्थितियॉ विकट होने के साथ ही यहॉ पर सीढीनुमा खेती जो कि पूर्ण रूप से वर्षा पर निर्भर करती है, से इनकी आजीविका का निर्वाहन होना कठिन है। इसलिए जनजाति के लोग सरकारी व गैर सरकारी संस्थाओं में नौकरी करने हेतु पलायन करते हैं। जनजाति के लोग सरकारी सेवा को ही अत्यधिक महत्व देते है, जिसके लिए इनके समाज में सरकारी सेवा हेतु प्रतिस्पर्धा बढ़ी हैं। वहीं युवा वर्ग सरकारी सेवा में आने हेतु नगरीय क्षेत्रों में तैयारी (प्रशिक्षण, कोचिंग) हेतु अत्यधिक पलायन कर रहे है। सेवा में आने व रोजगार प्राप्त होने के पश्चात गाँव वापस नही लौटते है। सन् 1962 से पूर्व भोटिया समुदाय एक व्यापारिक समुदाय था, 1962 भारत–चीन युद्व पश्चात इनका व्यापारिक व्यवसाय समाप्त हो गया था, इनको मजबूरन जीविकोपार्जन हेतु कृषि, पशुपालन, एवं ऊनी कुटीर उधोगों का सहारा लेना पड़ा परन्तु बदलते समय के अनुसार इन व्यवसायों से इनकी जीविकोपार्जन कठिन हो गया था, इसलिए जीविकोपार्जन व आधुनिक सुख सुविधाओं की लालसा लेकर पलायन करने लगे।

अध्ययन का उददेश्य

प्रस्तुत शोध पत्र का उददेश्य उतराखण्ड राज्य के जनजातियों में हो रहे पलायन एवं उसके प्रभाव से है, इससे सम्बन्धित तथ्य निम्न बिन्दुओं में समाहित हैं–

1. राज्य के राष्ट्रीय एवं अन्तराष्ट्रीय सीमाओं में निवास करने वाली भोटिया जनजातियों में तीव्र गति से पलायन हो रहा है। जो राष्ट्र हित में नहीं है।
2. जनजातियों में हो रहे पलायन के कारणों का पता लगाना।
3. जनजातीय क्षेत्र में विषम भौगोलिक परिस्थितियों के कारण आवश्यक एवं मूलभूत सुविधाओं का आभाव होना।
4. जनजातियों के अपने परम्परागत रीति–रिवाज व खान–पान होते हैं, जो पलायन होने से प्रभावित एवं समाप्त होते जा रहे हैं, का अध्ययन करना एवं कारणों का पता लगाना।

सारणी सं0–1

जनपद में सर्वेक्षित भोटिया जनजाति ग्रामों की घटती हुई जनसंख्या का परिदृश्य

जनजाति जनसंखा 2001,एवं प्रतिदर्श ग्रामों की जनसंख्या

क्र. सं.	चयनित ग्राम का नाम	जनसंख्या 2001	जनसंख्या 2011	वर्तमान 2016
1	कैलाशपुर	24	271	141
2	मलारी	397	406	206
3	कोषा	164	157	75
4	जेलम	310	341	211
5	जुम्मा	78	81	34
6	सुकी	126	141	97
7	पैंग चक लाता	103	112	67
8	जुवाग्वाड़ चक सुभाँई	78	85	45
9	जुग्जू चक सुभाँई	32	40	30
10	तोलमा	90	105	78
कुल		1623	1739	984

स्रोत –जनगणना 2001, 2011 एवं प्रतिदर्श अध्ययन।

जनपद में स्थानान्तरण को प्रोत्साहित करने वाले कारक

धरातल पर समान भू–दृश्यों का निर्माण अथवा एक समान धरातल का पाया जाना सम्भव नहीं है। भौगोलिक व जलवायुगत विशेषताओं के साथ मानव स्वयं को ढाल लेता है, परन्तु सभी जनपुंज युक्त क्षेत्रों में सरल जीवन यापन करना कठिन है। अतः भौगोलिक विभिन्ताओं के आधार पर मानव के कार्यिक क्षेत्रों में भी अन्तर आना स्वभाविक है, इसलिए भौगोलिक व जलवायुगत कारणों व मानवीय मूल आवश्यकताओं के आधार पर स्थानान्तरण के स्वरूप भी भिन्न–भिन्न होते हैं। जनपद चमोली में जनजाति स्थानान्तरण के स्थानीय कारकों में प्रमुखतया प्राकृतिक कारक, सामाजिक कारक, रोजगार एवं व्यवसाय का आभाव रोजगारपरक शिक्षा का आभाव या शिक्षा के उचित अवसरों का आभाव उन्नत नगरीय जीवन का आकर्षण मनोरंजन के साधनों का आभाव औधोगीकरण का आभाव, यातायात सुविधाओं का आभाव एवं आर्थिक विपन्नता है, जिनके आधार पर जनपद से स्थानान्तरण हो रहा है, स्थानान्तरण को प्रोत्साहित करने वाले कारक इस प्रकार है।

भौगोलिक कारण

पर्वतीय क्षेत्रों में प्राकृतिक या भौगोलिक कारणों से प्रायः बहुतायत मात्रा में स्थानान्तरण हो रहा है। सामान्यतया व्यक्ति कठोर जलवायु वाले स्थानों से स्वास्थ्यवर्धक जलवायु वाले स्थानों की ओर स्थानान्तरित होते हैं। इसके अतिरिक्त प्राकृतिक प्रकोप, बाढ़, सूखा, भूकम्प, भू–स्खलन आदि ऐसी घटनाऐं हैं, जो स्थानान्तरण को प्रभावित करते हैं। जनपद के सुदूरवर्ती जनजति ग्रामीण भू–भागों की भौगोलिक बनावट आज के परिप्रेक्ष में मानवीय जीवन यापन करने के अनुरूप नहीं हैं, क्योंकि भौगोलिक परिदृश्य विषम होने के कारण मानवीय नित्य कार्यों को करने में कठिनाइयॉ होती हैं, उदाहरण स्वरूप कृषि क्षेत्रों का विखराव व सीढ़ीदार स्वरूप होने के कारण कृषि कार्य सरलता से सम्पन्न नहीं हो पाते, जबकि परिश्रम लागत मैदानी क्षेत्रों की अपेक्षा अधिक होने के बावजूद किसानों को उचित लाभ प्राप्त नहीं हो पाता, ग्रामीण भू–भाग के अर्न्तगत मानव को सम्पूर्ण कार्य बिना किसी प्रकार के साधनों के सम्पन्न करने होते है, जो कि विकास के इस युग में पर्वतीय ग्रामीण क्षेत्रों के लिए प्राचीन व परम्परागत ही साबित हो रहे हैं, परिणाम स्वरूप व्यक्ति गाँवों से नगरों की ओर स्थानान्तरण कर रहा है। जहाँ उसें जीवन यापन करने हेतु रोजगार उपलब्ध हो जाते हैं।

सामाजिक कारक

सामाजिक कारक भी स्थानान्तरण के लिए उत्तरदायी हैं, जैसे–विवाह के उपरान्त लडकियॉ अपने पति के घर चली जाती हैं, और उसका पति किन्हीं कारणों से स्थानान्तरित होता है तो साथ–साथ उसे भी जाना पड़ता है, इसके अतिरिक्त शिक्षा, स्वास्थ्य, मानसिक विकास व बच्चों की उज्जवल भविष्य की कामना भी व्यक्ति को गाँव से नगरों की ओर स्थानान्तरित होने को प्रोत्साहित करती है। जनपद के 10 प्रतिदर्श जनजाति गाँवों का अध्ययन करके पाया गया कि गाँवों में शिक्षा और स्वास्थ्य आदि सुविधाओं की भारी कमी है। शिक्षा की कमी के कारण बच्चों का मानसिक विकास सम्भव नहीं हो पाता, जिससे व्यक्ति उन स्थानों की ओर स्थानान्तरण कर रहा है, जहाँ उसे शिक्षा, स्वास्थ्य आदि सुविधाऐं सरलता से उपलब्ध हो जाती है।

रोजगार एवं व्यवसाय का आभाव

बेरोजगारी आज के युग की एक ज्वलन्त समस्या है। जिसकी वर्तमान युवा पीढ़ी कठिनाई से सामना कर रही है, जनजाति के युवा वर्ग इससे अछूता नहीं है। जनपद के प्रतिदर्श ग्रामों के अध्ययन में यह पाया गया कि अधिकांश युवा रोजगार एवं व्यवसाय की खोज में अपने मूल स्थानों को छोड़कर नगरीय क्षेत्रों में स्थानान्तरित हुए है। जनजातियों के पास जीविकोपार्जन हेतु कृषि भूमि व अन्य व्यवसाय बदलते समय के साथ प्रभावित होते चले गये, इसी कारण व्यवसाय एवं रोजगार की खोज में गाँवों से शहरों, नगरों की ओर स्थानान्तरित होते जा रहे है।

रोजगार परक शिक्षा का आभाव या शिक्षा के उचित अवसरों का आभाव

व्यक्ति उच्च एवं रोजगारपरक शिक्षा ग्रहण करने हेतु अपने मूल स्थानों से उन स्थानों की ओर पलायन कर रहा है, जहाँ उसे शिक्षा के अवसर प्राप्त हों, जनजाति के अल्पजन क्षेत्रों में उच्च शिक्षण संस्थान व रोजगारपरक शिक्षण संस्थान नहीं है, प्रतिदर्श अध्ययन में पाया गया कि जो युवा वर्ग अपने ग्रामीण क्षेत्रों से रोजगार, शिक्षा हेतु स्थानान्तरित होते हैं, वे उददेश्य पूर्ति के पश्चात वापस मूल गाँवों में नहीं लौटते है, बल्कि नगरीय क्षेत्रों में ही बस जाते हैं, इस क्षेत्र के ग्रामीणों ने नगरीय क्षेत्रों में अपने पक्के भवन बना लिए है, इनके नगरीय क्षेत्र, तपोवन, जोशीमठ, गोपेश्वर, कर्ण प्रयाग आदि है। जहाँ ये लोग वर्तमान समय में बसे है। सरकारी सेवारत कर्मचारी वर्ग अधिकतर देहरादून, ऋषिकेश आदि शहरों में बसे है। साथ ही ग्रामीण क्षेत्रों

में रहने वाले युवा जो सरकारी सेवा में नहीं है, अपने बच्चों को नगरीय क्षेत्रों में शिक्षा हेतु स्थानान्तरित कर रहे है, अल्पजन क्षेत्र व छात्र संख्या कम होने के कारण जो सरकारी शिक्षण संस्थान हैं, वे बन्द हो गये है। प्रतिदर्श 10 गाँवों में से 5 गाँवों में प्राथमिक स्कूल तक नहीं हैं। यही मुख्य कारण है कि सीमावर्ती गाँवों में पलायन बढ़ता जा रहा है।

उन्नत नगरीय जीवन का आकर्षण

उन्नत नगरीय जीवन का आकर्षण भी जनजातियों को पलायन होने पर विवश कर देता है। ग्रामीणों को यह समस्त सुविधाऐं उपलब्ध नहीं हो पाती जो नगरों में सरलता से प्राप्त हो जाती हैं। फलस्वरूप उन्नत नगरीय जीवन का आकर्षण भी जनजातियों को गाँव से नगरों में स्थानान्तरित होने को प्रोत्साहित कर रहा है।

मनोरंजन के साधनों का आभाव

वर्तमान समय में व्यक्ति मनोरंजन के साधनों का आदी हो चुका है। अर्थात मनोरंजन व्यक्ति की मूलभूत आवश्यकता बन गयी है। जनपद का सम्पूर्ण भू–भाग भौगोलिक दृष्टिकोण से विषमतायुक्त व सुदूरवर्ती है, जहाँ सभी ग्रामीण क्षेत्रों में मनोरंजन के साधन उपलब्ध नहीं है, विकास के वर्तमान दौर में जीवन यापन करने के साथ–साथ अनेक प्रकार के मनोरंजन के साधन निर्मित हो चुके हैं, परन्तु भौगोलिक विषमताओं के कारण मनोरंजन के समस्त साधन ग्रामीण क्षेत्रों से दूर हैं। अध्ययन में पाया गया कि 10 गाँवों में से 8 गाँवों में दूरदर्शन, दूरसंचार, व 7 गाँवों में यातायात सुविधाओं का आभाव व सभी गाँव समाचार पत्रों की पहुँच से दूर है। इन समस्त असुविधाओं के परिणाम स्वरूप ग्रामीणों को पलायन करने पर बाध्य होना पड़ रहा है।

यातायात सुविधाओं का आभाव

यातायात साधनों में सड़क मार्ग का निर्माण किसी भी क्षेत्र के विकास में जीवन रेखा का कार्य करती है। सुलभ यातायात मार्ग निर्माण के पश्चात ही हो पाता है, किन्तु जनपद चमोली अपनी भौगोलिक दशाओं के कारण यातायात के क्षेत्र में बहुत पीछे है। सभी ग्रामीण भू–भागों को मोटर मार्ग से जोड़ना असम्भव तो नहीं किन्तु कठिन अवश्य है। इसी कारण जनजातियों के गाँव अधिकांश कठिन भौगोलिक परिस्थितियों के कारण मोटर मार्गों से नहीं जुड़ पाये जो आज भी यातायात सुविधाओं से वंचित है।

भोटिया जनजाति पलायन का सीमान्त ग्रामीण क्षेत्रों में प्रभाव

जनसंख्या में कमी

जनपद चमोली के सीमान्त सुदूरवर्ती गाँवों में शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार, आदि मूलभूत सुविधाओं का आभाव है। ग्रामीणों को यह आवश्यक सुविधाऐं गाँवों में उपलब्ध नहीं हो पाती जो नगरों में सरलता से उपलब्ध हो जाती है, इसलिए जनसंख्या का एक भाग आवश्यक सुविधाओं के आभाव में पलायन कर रहा है। सुदूरवर्ती सीमान्त गाँवों में जनसंख्या में कमी आ रही है। जब कोई व्यक्ति अपने मूल स्थान को छोड़कर अन्यत्र बस जाता है, तो स्वभाविक ही उस स्थान की जनसंख्या वृद्धि में कमी पायी जायेगी, जनपद के अर्न्तगत सीमान्त क्षेत्रों में निवास करने वाली ग्रामीण भोटिया जनजाति जनसंख्या में निरन्तर कमी आ रही है, जो सीमान्त क्षेत्रों से पलायन होना एक विकट समस्या है, सीमा प्रहरी माने जाने वाली जनजातियों के इस प्रकार के पलायन पर रोक लगाना आवश्यक है, सरकार द्वारा इनको पलायन से रोकने हेतु नीति बनानी चाहिए। सन् 1971 से लगातार ग्रामीण जनसंख्या में कमी आ रही है।

सारणी सं0–2,

जनपद में जनजाति जनसंख्या वृद्धि, ग्रामीण व नगरीय (1971–2011)

क्र0 सं0	दशक	कुल जनसंख्या	ग्रामीण	नगरीय
1–	1971	8,155 (–)	6,629 (81.28)	1,526 (18.71)
2–	1981	9,164 (12.37)	6,583 (71.83)	2,581 (28.17)
3–	1991	10,085 (10.85)	7,751 (76.85)	2,334 (23.15)
4–	2001	10,484 (03.96)	7,230 (73.73)	3,254 (26.27)
5–	2011	12,260 (16.94)	8,746 (71.33)	3,514 (28.67)

स्रोत–जिला सांख्यिकी कार्यालय गोपेश्वर,

उपरोक्त सारणी से स्पष्ट है कि जनपद चमोली में भोटिया जनजाति की नगरीय जनसंख्या में निरन्तर वृद्वि हो रही है। 1971 में नगरीय जनसंख्या 18.71 थी, वह 1981 में बढ़कर 28.17 हो गयी 10 वर्ष में 9.46 प्रतिशत की वृद्धि हुई, वहीं बढ़ता हुआ क्रम जारी रहते हुए पाँच दशक में यह बढ़कर 28.67 हो गयी, 2011 में जनजाति जनसंख्या में सबसे अधिक वृद्धि दर्ज की गयी, वहीं नगरीय जनसंख्या 26.27 से बढ़ कर 28.67 हो गयी। इस प्रकार कहा जा सकता है कि जनजातियों में तीव्र गति से पलायन हो रहा है। जिसको राष्ट्र हित में रोकने की आवश्कता है। यदि जनजातियों में यह पलायन बढ़ता चला गया तो हमारे सीमान्त क्षेत्र जन विहीन हो जायेगें, जो शुभ संकेत नहीं होगा।

कृषि का ह्रास

आज प्रत्येक व्यक्ति उच्च जीवन निर्वाह की चाह में गाँवों से नगरों की ओर पलायन कर रहा है। गाँवों में किसानों को अपनी फसलों की उत्पादकता को बढ़ने के लिए समस्त सुविधाऐं उपलब्ध नहीं हो पाती, उनकी जो भूमि गाँव से दूरी पर होती है। वह यातायात की सुविधाओं के आभाव उन्नत बीज, खाद, सिंचाई आदि के आभाव में किसान उस भूमि पर फसल उत्पादन नहीं करता फलस्वरूप वह परती रह जाती है। सीमान्त क्षेत्र गाँवों की भूमि कुछ तो सेना पास है, कुछ नजदीकी भूमि में जनजाति के लोग कृषि कार्य करते हैं। मानव श्रम न होने और कृषि भूमि दूर होने के कारण भूमि परती ही रह जाती है, और धीरे–धीरे भूमि बंजर में परिर्वतित होती जा

रही है। अकेले मलारी गाँव में 2 हेक्टेअर भूमि, कैलाशपुर में 1 हेक्टेअर और जेलम में 4 हेक्टेअर, जुम्मा में 1 हेक्टेअर भूमि वर्तमान में बंजर हो चुकी है। इसीलिए जनजाति क्षेत्रों में पलायन होने से कृषि भूमि परती भूमि में तीव्र गति से परिर्वतित हो रही है।

पशुपालन में कमी

जनपद में स्थानान्तरण के प्रभाव से पशुपालन व्यवसाय में कमी के साथ–साथ स्थानीय लोगों की रूचि इनमें घटती जा रही है। इसका एक प्रमुख कारण यह है कि जनपद में जनजाति वर्ग में साक्षरता वृद्धि का प्रभाव जनपद के परम्परागत पशुपालन व्यवसाय पर हो रहा है। क्योंकि स्थानीय पशु से दूध, ऊन की मात्रा कम उपलब्ध होती हैं। साक्षर वर्ग इस कमी को देखते हुए पशुपालन से दूर हो रहे हैं, जबकि पूर्व में इस प्रकार की भावना जनजातियों में नहीं थी, दूसरा कारण यह है कि पूर्व में पशुपालन व्यवसाय व्यापारिक दृष्टिकोंण से किया जाता था। परन्तु व्यापार समाप्त होने के पश्चात निरन्तर पशुपालन में कमी आती रही, पहले व्यापारी लोग पशुओं को मालवाहक के रूप में प्रयोग करते थे, इस प्रकार पलायन होने से पशुपालन वर्तमान समय में पूर्व की तुलना में लगभग समाप्ति की ओर है। अध्ययन में जनजातियों से मिली जानकारी के अनुसार 5 वर्ष पूर्व व वर्तमान की स्थिति इस प्रकार है।

सारणी सं0–3

सर्वेक्षित ग्रामों में पशुओं की संख्या 2011 एवं 2016,

क्र.सं.	ग्राम का नाम	भेड़, बकरी 2011	भेड़, बकरी 2016	घोड़े, खच्चर 2011	घोड़े, खच्चर 2016	गाय, बैल 2011	गाय, बैल 2016
1–	कैलाशपुर	387	156	15	08	281	103
2–	मलारी	810	506	33	21	312	198
3–	कोषा	680	403	24	14	245	155
4–	जेलम	970	511	28	12	150	98
5–	जुम्मा	556	303	22	08	103	55
6–	सुकी	350	256	15	06	76	36
7–	पैंग चक लाता	250	109	04	–	82	35
8–	जुवाग्वाड़	601	352	08	03	40	26
9–	जुग्जू चक सुभॉई	50	09	–	–	33	22
10–	तेलमा	80	32	04	–	43	28
कुल–		4734	2637	153	72	1365	756

स्रोत–सर्वेक्षित ग्रामों में साक्षात्कार पर आधारित।

कुटीर उद्योगों में कमी

जनपद में जनजाति समाज के अधिक पलायन होने से इनके परम्परागत ऊनी कुटीर उद्योग व ऊन से निर्मित वस्त्रों पर पड़ता दिखाई देता है। 1962 से पूर्व यह समुदाय पूर्णतया व्यापारिक समुदाय था। 1962 के पश्चात आजिविका चलाने हेतु इस समुदाय ने कृषि व पशुपालन का सहारा लिया और वर्तमान समय में बदलते समयानुसार इन वस्त्रों का विपणन न हो पाने व सही मूल्य न मिलने से लगभग समाप्त होने लगे है। सर्वेक्षित ग्रामों में कुटीर उद्योगों का अध्ययन किया गया जो जनजातियों में प्रचलित थी। जनजातियों में प्रचलित ऊनी वस्त्र उधोग ही प्रमुख है, जो बदलते समयानुसार कम होते चले जा रहे हैं। इनके उत्पादों में दन, कालीन, चुटका, पंखी, लवा, आसन, स्वेटर, ऊनी कोट, पयजामा, टोपी, मफलर आदि वस्त्रों का उत्पादन किया जाता हैं, अध्ययन में पाया गया कि वर्तमान समय में इनके उत्पादन में भारी कमी आ रही है। जनजाति के लोग मानते हैं कि वर्तमान समय में युवा वर्ग शिक्षित होने व उनके पलायन होने से इन कार्यों को पसन्द नहीं करते हैं, साथ ही वर्तमान समय में इनकी माँग में भी गिरावट आने से लोग इन व्यवसायों से दूर होते जा रहे हैं। अध्ययन में देखा गया कि इनके रॉच जिनसे वस्त्र उत्पादन का कार्य किया जाता है, वे बन्द व क्षतिग्रस्त अवस्था में देखे गयें, रॉच दो प्रकार के होते हैं, एक बड़ी व दूसरी छोटी बड़े रॉच से पंखी, लवा आदि बनाये जाते है। जबकि छोटी रॉच से दन, चुटका, आसन आदि बनाये जाते हैं, बदलते समय के साथ इनके व्यवसाय भी बदल रहे हैं। जिससे इनकी सामाजिक–सांस्कृतिक क्रियाकलाप प्रभावित होंगे।

जड़ी–बुटी उधोग

जनजातियों का वनों से एक अटूट सम्बन्ध रहा है। वन उपजों का जनजातियों के जीविकोपार्जन एवं दैनिक आवश्यकताओं की पूर्ति में महत्वपूर्ण योगदान है। वन नीति के कठोर हो जाने से वनों से इनका सम्बन्ध कम होता जा रहा है। वनों से जनजाति के लोग फरण, जिम्बू, जंगली मसरूम, आवश्यक आवश्यकता हेतु लकड़ी, जंगली सब्जियाँ, दवाई हेतु जड़ी–बूटी आदि एकत्रित करके बेचते थे जो वर्तमान समय में प्रतिबंधित हो जाने से जनजातियों का अर्थतन्त्र गडबड़ाता रहा और वे पलायन को विवश होते चले गये।

निष्कर्ष

भूमण्डलीकरण के दौर में आज विश्व के प्रत्येक क्षेत्र पर मानव अपने अर्थव्यस्था को और अधिक मजबूत करने हेतु प्रयासरत हैं। जो स्थानान्तरण व व्यापारिक क्रियाओं द्वारा किया जा सकता हैं। विश्व के समस्त राष्ट्र तीन प्रकार के अर्थव्यवस्थाओं के अर्न्तगत बँट चुके है। मध्यम अर्थव्यवस्था अर्थात विकासशील राष्ट्रों के लोग अपनी अर्थव्यवस्था को और अधिक मजबूत करने हेतु विकसित राष्ट्रों की ओर अग्रसर होते जा रहे हैं।

अध्ययन क्षेत्र जनपद चमोली के जनजाति अपने विषम भौगोलिक परिस्थितियों के कारण जग जाहिर है।

यहाँ निवास करने वाला जनजाति वर्ग बिना स्थानान्तरण के अपनी अर्थव्यवस्था को सुदृढ़ नहीं कर पा रहा है, क्योंकि विकास के वर्तमान दौर में यहाँ की भौगोलिक दशाएं उन्हें उच्च जीवन स्तर प्रदान नहीं कर पा रही है। जिस कारण उन्हें स्थानान्तरण हेतु विवश होना पड़ रहा है। युवा वर्ग शिक्षित होने व इनके समाज में शिक्षा का स्तर बढ़ने से युवा अपने परम्परागत कुटीर उद्योगों से दूर होते जा रहे हैं। स्थानान्तरण होने से इसका प्रभाव इनके सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक रीति–रिवाजों पर हो रहा है। स्थानान्तरण वर्तमान समय में राष्ट्र में जनाधिक्य के प्रभाव को और प्रभावित करने में सहायक बन रहा है। अतः इन प्रभावों को कम करने के लिए सरकारी नीतियों का पालन होना नितान्त आवश्यक है ताकि स्थानान्तरण में कमी हो सके।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. राधा कमल मुकर्जीः चिन्तन परम्परा, गीता शाह, वी0 सी0 शाह, भोटिया एवं बौक्सा जनजातियों की शिक्षा एवं राजकीय सेवा में सहभागिता का तुलनात्मक अध्ययन, कुमार प्रिन्टर्स चान्दपुर बिजनौर, अंक 2 दिसम्बर 2008, पृ0 सं0 192।
2. भारत की जनजातियाँ, भारत की प्रमुख जनजातियॉ, विजय कुमार तिवारी, हिमालया पब्लिसिंग हाऊस, दिल्ली, पृ0 सं0 63, वर्ष 1998।
3. उतर भारत भूगोल पत्रिका, एफ0 जेड0 जमाली, जनसंख्या वृद्वि और जनसंख्या संक्रमण के स्थानिक परवर्ती प्रतिरूप, आनन्द प्रिन्टर्स गोरखपुर, अंक 25, संख्या–2, दिसम्बर 1989।
4. हेबिटाट इकोनोमी एण्ड कल्चर ऑफ ट्राईबल पीपुल इन चमोली डिस्ट्रकट ए ज्योग्राफिकल स्टड़ी, अप्रकाशित शोध ग्रन्थ, वी0 एच0 यू0 वराणसी, वी0 पी0 देवली, पृ0 सं0 109, सन् 1991।
5. उत्तराँचल की जनजातियों के सामाजिक–आर्थिक विकास का भौगोलिक विश्लेषण, अप्रकाशित शोध ग्रन्थ, एच0 एन0 बी0 जी0 यू0 श्रीनगर गढ़वाल, एम0 सिंह, पृ0 सं0 119, सन् 2010।
6. मध्य हिमालय की भोटिया जनजाति, पॉगती एस0 एस0, तक्षशिला प्रकाशन नई दिल्ली, 1992।